रूपांतरण और बदलाव जैविकिय प्रक्रियाओ का हिस्सा है। जेंडर 'जैविकिय अंतर पर आधारित ना होकर, जेंडर वर्ल्ड में हमारे अनुभवों और उनका जैविक प्रक्रियाओं पर प्रभाव है। हमारे सम्पूर्ण जीवन में बायोलोजिकल प्रोसेस हमारे सोचने और सेक्स और जेंडर के बारे कान्सेपचुलाइज करने को प्रभावित करती है। इसके कई प्रभाव पड़ते है – 1 हम संबंध की जैविकी को बदलाव के रूप में देखते हैं जो सेक्स/जेंडर डिविजन खत्म करने में मदद करती है। 2/ स्थिरता को नकारने की वजह से हर व्यक्ति का अपना एक युनिक अनुभव होगा विकास प्रक्रिया के संबंध में। 3/ बदलाव पर जोर देने की वजह से पदार्थवाद, निर्धारणवाद खत्म होगा।

स्त्री के लिए अपने शारीरिक जैविक अनुभवों को परिभाषित और थ्योराइज करना एक ट्रांस्फोरमेशन की तरह है – जीवन जैसे उन्होंने जाना ('life' as we have known it')

(Include on Page no. 2)

मानवतावादी और नारीवादी जीवविज्ञानी Lynda Birke सेक्स और जेंडर को नस्ल के पैशन, जीवविज्ञान को भी साथ में रखकर देखने की बात करती है जो कि मनुष्य के प्राकृतिक संबंधों को समझने का वैज्ञानिक नजरिया है। 'सेक्स और जेंडर' दोनों में से कोई भी स्थिर नहीं है जिस प्रकार मानव शरीर अपने आसपास के सामाजिक वातावरण के अनुकूल

(transform-ational) परिवर्तित होता रहा है उसी प्रकार सेक्स और जेंडर भी। [illegible] लिंडा इसे नारीवादी विज्ञान (feminist science) कहती है।

10

फेमिनिस्ट की कई अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आई। 1/ हमारी अपनी जैविकी की समस्त सामाजिक व्यवस्था का परिणाम है। अगर स्त्री महावारी संबंधित समस्याओं (पवित्रता, और कुछ खास व्यवहार) का सामना करती है तो वह सामाजिक तौर पर निर्मित ही हैं 2/ नारीवादी पदार्थवाद की तरह लौट जाना। जहां स्त्री के जैविकीय फंक्शन को लेकर करती है और साथ में वह उसके व्यवहार को उसकी प्रकृति मानती है। इस तरह 20वीं शताब्दी के नारीवादी भी उसी दुविधा का सामना करते हैं जो पहले के नारीवादियों के सामने रही थी।

कंटेम्परेरी फेमिनिज्म (समकालीन नारीवाद) पुराने नारीवादियों से आगे बढ़ते हुए इन चुनौतियों को स्वीकार कर उनका जवाब ढूंढने की कोशिश करता है। उदाहरण के तौर पर लुसी इरिगैरी तर्क देती है कि स्त्री शोषण सिर्फ सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के कारण नहीं बल्कि भाषा प्रयोग और सोचने की जो प्रक्रिया है जो हमारी संस्कृति का निर्माण करती है। आज़ाद होने के लिए स्त्री को भेद की मानसिक जड़ को पकड़ना होगा जिसके लिए जरूरी है कि नए तरीके से स्त्री शरीर और लैंगिकता की बात की जाए। ज्यादातर लोग जैविकी को स्थिर रूप में देखते हैं ना कि बदलाव और प्रोसेस/प्रक्रिया के रूप में। इसलिए वो सोचते हैं कि शरीर जैसा है और जैसा ही रहेगा उसमें कुछ बदलाव नहीं होते। शारीरिक संरचना संबंधित कुछ चीजें स्थिर रही हैं। जब तक कोई ऐसा कोई अविष्कार नहीं हो जाता प्रजनन के लिए मानव शरीर की आवश्यकता ना हो स्त्री शरीर गर्भ धारण करता रहेगा।

इसी तरह के तर्कों ने प्रतिकथोत्पत्ति, विक्टोरियन के प्रोफेशनलिज्म में समान अधिकारों की मांग को बल दिया। स्त्री इस तरह वैज्ञानिक प्रोफेशन में भी दाखिल हुई और स्त्री और विज्ञान विरोधी हैं इस धारणा को तोड़ा।

कंटेम्परेरी फेमिनिज्म और सायकोलोजिकल डिटरमिनिज्म : इतिहास की चुनौती

कंटेम्परेरी फेमिनिज्म 1960 के दशक में प्रभाव में आया है, व्यापक तौर पर दूसरे सामाजिक आंदोलनों से, वह इन मान्यताओं को चुनौति देता है कि प्रचलित जेंडर-रिलेशन सही और स्वाभाविक हैं। जैसा पहले समय के नारीवादी मानते रहे। एक कंटेम्परेरी फेमिनिस्ट की एक प्रतिक्रिया यह भी थी वह इस तरह को हर अनुमान को खारिज कर देते हैं जहाँ जैविकी को जेंडर-रोल का कारण माना हो- पर वे सामाजिक व्यवस्था (विज्ञान भी) के प्रभाव को इसका कारण मानते हैं समस्या की जड़ समान अधिकार परंपरा में भी जो 'जेंडर' सामाजिक तौर पर निर्मित मानती है और अंतर खत्म करने की बात करती थी इस अप्रोच के कंटेम्परेरी फेमिनिज्म पर दो प्रभाव पड़े - एक तो यह शारीरिक भेद और वास्तविकता को पूरी तरह नज़रअंदाज कर देती है। दूसरा यह औरतों के बीच के भेद को नज़रअंदाज कर उन्हें एक समग्र समूह के रूप में देखती है। यही दोनों बाते 1980 के दशक में केन्द्र में रही और विरोध का सामना किया।

का रूप धारण कर इसमें स्त्री के बेहतर गुणों —
पालन-पोषण (nurturing) और नैतिक समझ (moral aptitude)
को सामने रखा जाता है। कुछ ऐसे और आगे बढ़ स्त्री को
दूरदर्शी बताते हुए, भविष्य में आने वाले सर्वनाश से बचाने
वाली क्षमता रख, विश्व को बेहतर निर्माण करने वाली के रूप में
देखते हैं। स्त्री की श्रेष्ठता उसकी शारीरिक संरचना अधिक जटिल होने
के कारण भी कही गई।
इस तरह का तर्क 19वीं शताब्दी के अंत में देखने को मिला।
व्यक्तिगत और पब्लिक क्षेत्र के बीच बढ़ती दूरी के बीच स्त्री को सिर्फ
घरेलु क्षेत्र तक सीमित करने वाली सोच को चुनौती मिली।
स्त्री को अधिक नैतिक मानते हुए उन्हें प्योरिटी कैम्पेन में सम्मिलित किया।
नारीवादियों ने अलग-अलग क्षेत्र में विभाजन और
निर्धारणवाद को भी चुनौती दी। घरेलु क्षेत्र तक सीमित
स्त्री श्रेष्ठता में बदल गई और अलग-अलग क्षेत्र विभाजन में पुरुषों
के वर्चस्व पर स्त्री आक्रमण था या यूं कहें स्त्री मूल्यों का आक्रमण हो गया।
इसी बीच 'eugenics movement' को नारीवादियों का सपोर्ट
मिला। वह ऐसा eugenics की वजह से चुनाव करने की आजादी (freedom of
choice) मिलने के कारण कर रही थी। दूसरा यह आंदोलन
motherhood (मातृत्व) को glorify कर रहा था। एक अन्य कारण
नारीवादियों का इस आंदोलन के अनैतिक पहलु को ना समझना या
नज़रअंदाज कर देना भी था।

वैचारिक स्तर पर

7

(7) (5)

फ्रांसेस पावर कोब प्रश्न करती है कि साइंस को स्त्री संबंधित मुद्दों पर विचार करने के आवश्यकता क्यों है? वह विकटोरियन विवेसेक्सन (जीवच्छेदन) आंदोलन की समर्थक थी। यह आंदोलन विज्ञान के खिलाफ उग्र आलोचनात्मक नजरिया रखता है, जो मेडिकल प्रोफेशन की बढ़ती सत्ता से खतरे को देखता है। विज्ञान खतरनाक तरीके से प्रकृति और सेहत के क्षेत्र में अपना दखल बढ़ा रहा था। इसी सोच के साथ स्त्री - विविसेक्शनिस्ट (जीवच्छेदन के विरोधी), वेक्सीनेसन के खिलाफ खड़े आंदोलन और कोंटाजियस डिजिज़ एक्ट कार्यान्वयन के खिलाफ आंदोलन का भी हिस्सा बनते हैं। कंटाजियस एक्ट में नारीवादियों की इन सभी आंदोलन में गहरी साझेदारी रही। मेडिसिन द्वारा स्त्री की तरफ व्यवहार वैसा ही था शरीर क्रियाविज्ञान में पशुओं के साथ। स्त्री पशुओं की तरह प्रकृति के करीब समझी जाती है और विज्ञान की इसी विषय वस्तु के कारण उस पर प्रश्न उठाए गए। विज्ञान का स्त्री को पशु और प्रकृति की तरह वस्तु रूप में देखना और उनके बीच की समानताओं को खोजना उसे essentialism (पदार्थवाद) (मूलतत्ववाद) (स्वभाववाद) की तरफ ले जाता है, जिसकी भी नारीवादीयों ने आलोचना की।

③ स्त्री की प्रकृति

स्त्री और पुरुष का व्यवहार निर्धारित / स्वाभाविक होता है, इस विचारधारा पर एक नारीवादी प्रतिक्रिया यह मिलती है जिसमें स्त्री-पुरुष भेद के जैविक आधार को प्रश्न करने की बजाय उसका नारीवादी प्रारूप सामने रखा जाता है। असेन्शलिज़म (पदार्थवाद)

दर्शन मित्र

(6)

कोलिंबर्न के अनुसार एवलिन / फ्लेचर केलर की इंफार्मोरिटी का मानना है कि भिन्नता में समानता विश्वास है। (equality within difference)

19वीं शताब्दी के अंत तक बायोलॉजिकल डिटरमिनिज्म को मनोचिकित्सकों द्वारा चैलेंज किया गया।

इस तरह देखा जा सकता है कि 18वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी और 19वीं शताब्दी के अंत तक बहस के मुद्दों में कितना अंतर आ गया था। कंटेम्परेरी फेमिनिस्ट के अनुसार 'गुड साइंस' को ('बैड साइंस') के काउंटर पोज़ की तरह देखना, जो तथ्यों को बेहतर तरीके से सामने रखती है ज्यादा टिकनेवाला तर्क नहीं था। उनके अनुसार साइंस को नैतिक रूप से तटस्थ समझना गलत है। उसके ऊपर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पहलुओं का प्रभाव समझना जरूरी है।

(2) रैडिकल क्रिटिक (उग्रवादी आलोचना) — विज्ञान की अपूर्वता

कंटेम्परेरी फेमिनिस्ट क्रिटिक विज्ञान में अन्तर्निहित मूल्यों की आलोचना करता है। यहां प्रश्न सिर्फ गुड और बैड साइंस के अंतर तक सीमित नहीं है पूरे विज्ञान शास्त्र की आधारभूत धारणाओं की जांच करता है। विज्ञान इस क्रिटिक के अनुसार नैतिक रूप से निष्पक्ष नहीं है। यह अप्रोच रैडिकल क्रिटिक जिसका जन्म 1960–70 में वियतनाम युद्ध के दौरान हुआ, से प्रभावित है। फेमिनिस्ट क्रिटिक दिखाते हैं कि किस तरह बायोलॉजिकल डिटरमिनिज्म वैचारिक स्तर पर काम करती है और यह किसी समाज के अपने वैज्ञानिक विचारधाराओं से प्रभावित होती है।

और उसके अंत में भी हुआ।
इन परिवर्तनों के साथ विज्ञान भी अपनी खोजों में आगे बढ़ रहा था
जैविक विज्ञान सेल (cell) की स्टडी पर फोकस कर रहा था
उसने एक-दूसरे व्यक्ति के बीच अंतर को स्वाभाविक समझा गया।
और इन गर्भों को उनके कुपल
औरतों के अत्यधिक भावुक होने का कारण [illegible] बताने वाली
थ्योरीज लगातार बदल रही थी- ओवरी, युट्रस से लेकर ओवरीयन
हारमोन तक।
मेडिकल साइंस के जर्नल / मैग्जीन में स्त्री को लगातार कमजोर
और जल्दी बीमार पड़ने वाली के रूप में दिखाया जा रहा था। यह उनके
स्वास्थ्य पर शिक्षा का नकारात्मक प्रभाव था क्योंकि शिक्षा लेने के लिए
जितनी एनर्जी की जरूरत होती है वह स्त्रियों में नहीं होत।
इस तरह पुरुष की तरह शिक्षा के क्षेत्र में आ जाने की वजह
से और उससे बराबरी करने के चक्कर में उनकी सेहत लगातार
गिरती जा रही थी। इस तरह की थ्योरीज को इफी ने सिरे से
खारिज कर दिया और कहा कि पहले इस तरह का वातावरण बनाया
गया कि स्त्री को कमजोर दिखाया गया और फिर इसका कारण
जैविकी अंतर को बना दिया।
एंटोनी ब्लैकवेल भी स्पीनर और डार्विन द्वारा दिए गए जेंडर भेद पर
अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहती है कि अगर स्त्री प्रकृति
(woman nature) को जानना होगा पर अभी तक
विज्ञान ने ~~[illegible]~~ इसे अपनी इनक्वायरी का हिस्सा
नहीं बनाया है।

स्त्री/पुरुष औरत/नारी - आदमी
जैविक अर्थ सामाजिक अर्थ
(male/female) (man/woman)

सेक्स और जेंडर शब्द के बीच का भेद भी नया है इसलिए नारीवादियों में कुछ विरोधाभास देखने को मिलता है। लिंग विरुद्ध भी नारीवादी ... अर्थों के साथ ही लेती है। इस अंतर को नए अर्थों ...

① जैविक निर्धारणवाद का विरोध और विज्ञान की आलोचना (गुड और बैड साइंस का अंतर)

उन्नीसवीं शताब्दी के नारीवादियों ने जैविक निर्धारणवाद (Biological Determinism) का विरोध उसी प्रकार किया है जैसा कंटेम्परेरी नारीवादी करते हैं। एक तरीका यह रहा है कि जैविक निर्धारण को इंगित करते कथनों का आधार न मिलने पर विज्ञान एवं ... के प्रयोगों से उत्तर खोजने की कोशिश करना। इसमें तर्क किया जाता है कि जैविक निर्धारणवाद 'बैड साइंस' का नतीजा है, 'गुड साइंस' संभव है और उसके प्रयोग जैविक निर्धारणवाद जैसे निष्कर्ष पर नहीं पहुंचेंगे।
नारीत्व व पुरुषत्व किसी विशेष व्यक्ति औरत या आदमी को दर्शाते हैं। यह 19वीं शताब्दी में माना गया। उससे पहले तो माना जाता था कि सभी व्यक्तियों के अंदर पुरुषत्व व स्त्रीत्व दोनों रहता है और इन दोनों तत्वों के बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है। दूसरी ओर लैंगिक भेदभाव, लिंग के आधार पर समाज में भेदभाव भी, 18वीं शताब्दी के नारीवादियों के अनुसार, सामाजिक नियमों के कारण आया। सामाजिक अन्याय जिसकी वजह से स्त्री पर प्रतिबंध लगे। स्त्री शिक्षा ... जाने लगी। प्राकृतिक रूप से पुरुष व स्त्री में भिन्नता को जरूरत से ज्यादा समझा गया सामाजिक भिन्नता का आधार 19वीं शताब्दी.

3
दर्शन मित्र

(२)

बायोलॉजी ने समाज का कुछ शब्दों के उल्टकर और उनके विअर्थ देने के करवायी है। जैसे — जीवविज्ञान एक डिसीप्लीन ऑफ स्टडी भी है और यह किसी जीव की शारीरिक संरचना व प्रक्रिया को बताने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

~~है हॉर्मोन जैविक के अंतर है — जैविक अंतर को जोड़ दिया जाता है~~

स्त्री पुरुष है

⇒ स्त्री पुरुष जैविक रूप से भिन्न है —— जैविक अंतर का प्रभाव जेंडर भेद पर — समाज में
(हॉर्मोन, विकास प्रक्रिया, शारीरिक संरचना)

- स्त्री को पुरुष से कमजोर मानना

जैविकभेद = जेंडर भेद

इसके आधार पर

★ स्त्री ऑफिस के कामकाज नहीं कर सकती क्योंकि उसका हारमोन शारीरिक पुरुष से अलग है जो उसे कम प्रतिभाशाली बनाता है।

* पितृसत्ता / पुरुष प्रभुता उसके हारमोन में है।

जैविक विश्लेषणवाद

⇒ स्त्री और नारी शब्द को अर्थ में लेता है।

स्त्री — जैविक अर्थ — शरीर संरचना, जैसे — जीव जो अण्डे देता है

नारी — सामाजिक अर्थ — विशेष तौर पर नारीवादी शब्दकोश में जिसका अर्थ है

~~[illegible]~~

समाज द्वारा निर्मित
और इतिहास द्वारा संक्रमित → छवि

2

प्रजनन क्षमता पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लेना चाहते हैं वह इसमें स्त्री कर (उदाहरण- टेस्ट ट्यूब बेबी, पुरुष के बच्चा जन्म देने की संभावनाएं और ऐसी कुछ खबरें विज्ञान के चमत्कारकार के रूप में अखबार में पढ़ने को मिला) स्त्री को डिसइम्पावर कर देना चाहते हैं उनका मानना है कि स्त्री प्रकृति के ज्यादा करीब होने के कारण धरती, पर्यावरण, जीवन को बेहतर तरीके से समझ सकती है और उसके संरक्षण का काम कर सकती है।

इस तरह तीन अलग-अलग नारीवादी अप्रोच देखने को मिलती हैं।

(समस्या: प्रजनन क्षमता के रूप में स्त्री की अनोखी शक्ति छिन जाना, असली अस्मिता, पहचान पर प्रश्न लगाना)

(1) जैविक निर्धारणवाद का विरोध
(2) विज्ञान का आलोचनात्मक विश्लेषण व विरोध] लिंग भेद को सामाजिक संरचना की उपज समझना (Social construction)

(जेंडर भेद को सामाजिक संरचना मान स्वाभाविक मानना और स्त्री को पुरुष के अधीन स्वीकार करना)

(3) स्त्री व पुरुष के बीच के जैविक अंतर को स्वीकार कर, इस अंतर को स्त्री शक्ति के रूप में देखना

इस तरह (1+2) व (3) दो विरोधी भाव देखने को मिलते हैं। 1980 तक नारीवाद इन दो विरोधी विचारधाराओं के बीच फंस गया और बीच का रास्ता देखने लगा जहां विज्ञान को पूरी तरह खारिज कर स्त्री शक्ति को कम न किया जाए और सामाजिक निर्माणवाद को स्वीकार कर पुरुष वर्चस्व को स्वाभाविक मानकर उसके तले दबना ना पड़े।

लिंडा बिर्क अपने इस लेख में इसी विरोध से बाहर निकलने का रास्ता दिखा रही है। वह स्त्री व जैविक विज्ञान के संबंध को नव दृष्टिकोण से खोज रही है। * (include here) From Pg.12

3.1 (1) लाइफ एज वी हैव लिव्ड इट - फेमिनिज्म एण्ड द बॉयलोजी ऑफ जेंडर - (1) बॉकुन

(Meaning of Title — जीवन को जैसे हमने समझा है - नारीवाद और लिंग का जैविकविज्ञान)

— लिंडा बिरक

कंटेम्परेरी फेमिनिज्म हर उस कोशिश का विरोध करती है जिसमें स्त्री-पुरुष के बीच असमानता, स्त्री-शोषण का आधार उनके जैविक अंतर को बताया गया है। जैविक निर्धारणवाद के उदाहरण हमें आस-पास आसानी से मिल जाते हैं- चाहे वह बच्चों (लड़की-लड़का) की परवरिश और जन्म के बारे में हो, लैंगिकता को लेकर हो या किसी एक नौकरी के लिए अपने आपको सक्षम समझने को लेकर हो, यहां यही तर्क दिये जाते हैं कि लिंग-भेद स्वाभाविक (natural) है और ये बायलाजीकल डिफरेंसस की वजह से है। नारीवादी इसी तरह के निर्धारणवाद के खिलाफ अपनी आवाज उठाते हैं। उनका तर्क है कि लिंग आधारित असमानता का जैविक विज्ञान से कोई संबंध नहीं है और यह (लिंग आधारित कार्य विभाजन) सामाजिक संरचना (Social construct) का नतीजा है।

जैविक निर्धारणवाद (Biological determinism) को नकारने मात्र में संतुष्टी न पाने वाली नारीवादी अन्य विचारधाराएं भी सामने आती हैं। एक विचारधारा के अनुसार सिर्फ कुछ सिद्धांतों को अस्वीकार करने या उनकी आलोचना करने से काम नहीं चलेगा बल्कि पूरे विज्ञानशास्त्र का आलोचनात्मक आकलन करना होगा जो इस तरह के सिद्धांतों को जन्म देता है। वहीं कुछ नारीवादी जेंडर को सामाजिक संरचना की उपज मानने वाले तर्कों को खारिज करते हैं और कहते हैं कि इसतरह कि विचारधारा शारीरिक वास्तविकता और स्त्री अनुभव को नजर अंदाज कर देती है, जो सही नहीं है। इन नारीवादियों का मानना है कि स्त्री जैविकी जो उसे पुरुष से अलग बनाती है, वह उसका वजूद स्थापित करती इस अंतर को खत्म करना पुरुष की राजनीति है। नई टेक्नोलोजि स्त्री

8

का रूप धारण कर इसमें स्त्री के बेहतर गुणों —
पालन-पोषण (nurturing) और नैतिक समझ (moral rectitude)
को सामने रखा जाता है। कुछ इसे और आगे बढ़ा स्त्री को
दूरदर्शी बताते हुए, भविष्य में आने वाले सर्वनाश से बचाने
वाली क्षमता रख, विश्व को बेहतर निर्माण करने वाली के रूप में
देखते हैं। स्त्री की श्रेष्ठता उसकी शारीरिक संरचना अधिक जटिल होने
के कारण भी कही गई।
इस तरह का तर्क 19वीं शताब्दी के अंत में देखने को मिला।
व्यक्तिगत और पब्लिक क्षेत्र के बीच बढ़ती दूरी के बीच स्त्री को सिर्फ
घरेलू क्षेत्र तक सीमित करने वाली सोच को चुनौती मिली।
स्त्री को अधिक नैतिक मानते हुए उन्हें जेंडर कैम्पेन में सम्मिलित किया।
नारीवादियों ने अलग-अलग क्षेत्र में विभाजन और
निर्धारणवाद को भी चुनौती दी। घरेलू क्षेत्र तक सीमितता
स्त्री श्रेष्ठता में बदल गई और अलग-अलग क्षेत्र विभाजन में पुरुषों
के वर्चस्व पर स्त्री आक्रमण या यूं कहें स्त्री मूल्यों का आक्रमण हो गया।
इसी बीच 'eugenics movement' को नारीवादियों का सपोर्ट
मिला। वह ऐसा eugenics की वजह से चुनाव करने की आजादी (freedom of
choice) मिलने के कारण कर रही थी। दूसरा यह आंदोलन
motherhood (मातृत्व) को glorify कर रहा था। एक अन्य कारण
नारीवादियों का इस आंदोलन के अनैतिक पहलू को ना समझना या
नज़रअंदाज कर देना भी था।

वैचारिक स्तर पर
वैज्ञानिक विचारधाराओं से प्रभावित होता है।
कर दृष्टिकोण से ...
... हैरी ट्रूमैन अपने ...
पर परमाणु बम डाले जाने वाले ...
कहते हैं कि उनका ऐसा करने ...
लोगों की जान और माल की ...
वहीं दूसरी ओर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ... एक ... शोध विद्यार्थी